RNI No - RAJHIN/2003/9899 :: Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 February 2018 ::Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd February 2018

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : पंद्रहवां | अंक : दसवां | फरवरी–2018

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

5 **धन की सेवा**

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

11 **गुरुमुख की विनम्रता**

सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

21 **मन को शान्त करें**

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

25 **आओ! करो और देखो**

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
9950556671, 8079084601, 9871501999

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया
9667233304, 9928925304

उप संपादक-नन्दनी

सहयोग-सुमन आनन्द व परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। मूल्य : ₹5/–

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 191 Website : www.ajaibbani.org

महाराज कृपाल का शुभ जन्मदिवस 6 फरवरी

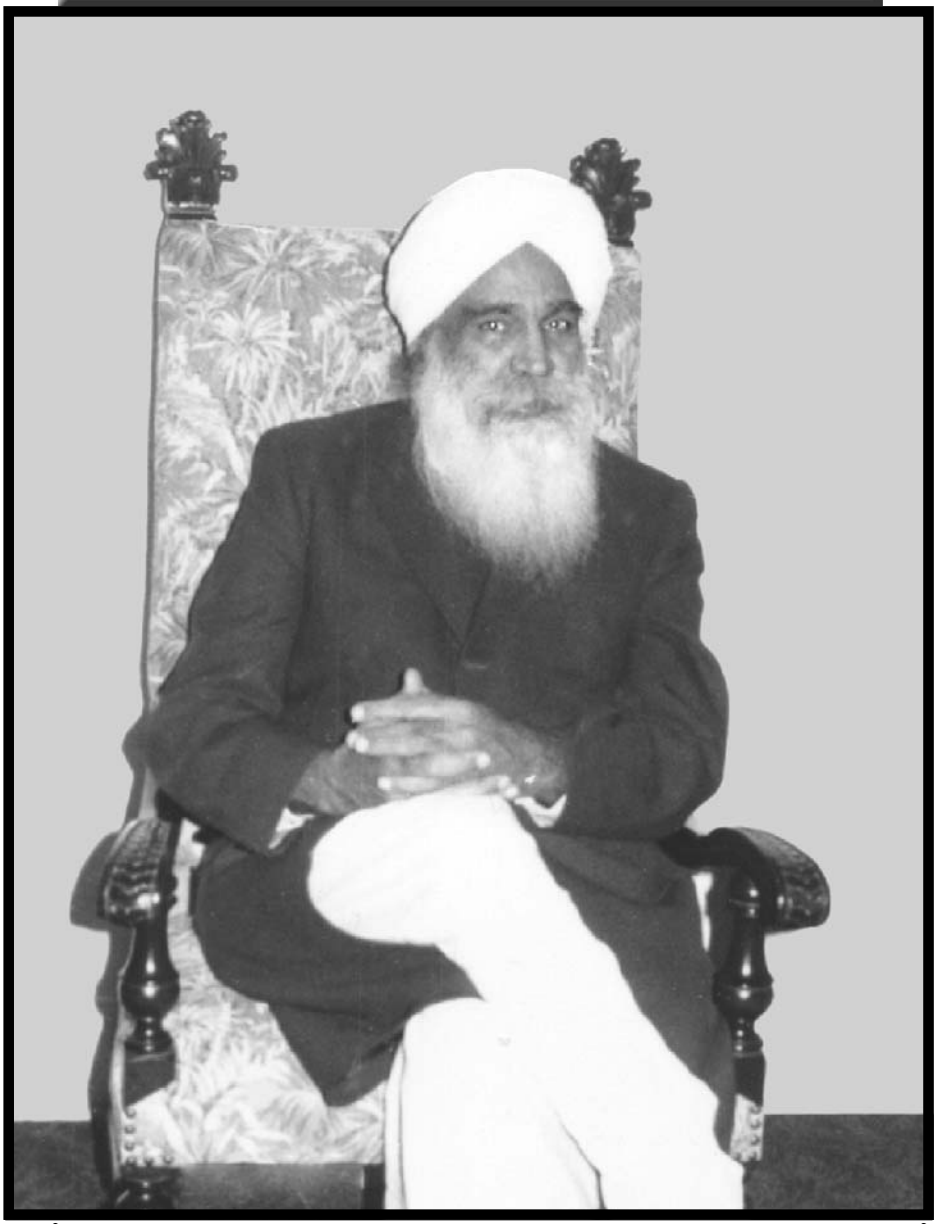

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

धन की सेवा

अगर हम धनवान हैं तो अच्छी बात है हमें दूसरों को भी धनवान बनाना चाहिए। ऐसा हम तभी कर सकते हैं जब हमारे पास कुछ है। हमारे सतगुरु बाबा सावन सिंह जी शुरू में दसवंद (अपनी आमदनी का दसवां हिस्सा) अपने गुरु बाबा जयमल सिंह जी को दिया करते थे। थोड़े समय के बाद आप अपनी सारी कमाई बाबा जयमल सिंह जी को भेजने लगे। आपके गुरु बाबा जयमल सिंह जी आपकी आमदनी में से परिवार के गुजारे के लिए कुछ दे दिया करते थे।

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हमें अपनी आमदनी का दसवां हिस्सा देना चाहिए। अगर आप साल के आखिर में हिसाब लगाएंगे तो आपको पता लगेगा कि आपने बीमारी या दूसरे खर्चों में से बहुत कुछ बचा लिया है; दसवंद देने से आपको कोई घाटा नहीं होता। आप अपनी कमाई में से जितना ज्यादा हिस्सा देंगे आपको उतनी ही ज्यादा दया मिलेगी।'' सतगुरु जब संसार में आते हैं तो अपना सब कुछ अपने गुरु को अर्पित कर देते हैं।

क्राईस्ट ने कहा है, ''अगर आप परमात्मा के राज्य में प्रवेश करना चाहते हैं तो अपना सब कुछ बेच दें।'' हर आदमी को ईमानदारी से रोजी-रोटी कमानी चाहिए, अपनी आमदनी में से दूसरे लोगों की मदद करनी चाहिए, जमाखोरी नहीं करनी चाहिए अगर आप जमाखोरी करेंगे तो आप अंदर से कठोर हो जाएंगे। अगर आप सोने या चाँदी को हाथ पर रगड़ेगे तो आपका हाथ काला हो जाएगा।

जब से इतिहास शुरू हुआ है यही रीति रही है। इब्राहिम के समय में भी सब लोग दसवंद दिया करते थे। अगर आप रूहानियत में स्वयं की

सेवा करना चाहते हैं तो आपको अपनी रोजी-रोटी ईमानदारी से कमाते हुए दूसरे लोगों की मदद करनी चाहिए, आप थोड़े से शुरू करें और बाकी परमात्मा पर छोड़ दें।

निस्वार्थ सेवा दो तरह से की जाती है। पहला तरीका तन की सेवा है अगर कोई बीमार है तो आप उसकी सेवा करें। सतगुरु सदा गरीबों और जरूरतमंदो को दिलासा देने और उन्हें दूसरों के बराबर बनाने के लिए आते हैं। अगर हम भी दूसरे लोगों की **धन से सेवा** करें तो संसार में कोई गरीब नहीं रहेगा आप जिस समय किसी की मदद कर रहे होते हैं उस समय आप अपने अंदर थोड़ी सी खुशी महसूस करते हैं।

जब आप किसी की मदद करते हैं तो इस आशा से न करें की इसके बदले आपको कुछ मिलेगा। कभी-कभी हम कुछ इसलिए देते हैं कि हमें स्वर्ग का सुख मिलेगा जोकि सही तरीका नहीं है। निस्वार्थ भाव से सेवा करना रूहानी सफर पर आगे बढ़ने की पहली सीढ़ी है। हमें उनकी मदद करनी चाहिए जो किसी हालात में गरीब हो गए हों, गुजारा न कर सकते हों। हम अपने बच्चों को अच्छा खाना खिलाते हैं जबकि पड़ोसी के बच्चे भूखे मरते हैं।

एक मुसलमान सन्त महिला थी, उसने मक्का के हज की तैयारी की। अरब में मक्का मुसलमानों का तीर्थ स्थान है। सन्त महिला के पास सफर के लिए पैसे थे और वह मक्का जाने के लिए तैयार थी लेकिन उसने पड़ोस में एक गरीब और भूखे व्यक्ति को देखा। उस महिला ने अपने पैसे उस व्यक्ति को दे दिए और वह हज के लिए नहीं जा सकी। जिसका नतीजा यह हुआ कि एक फरिश्ता उसके सामने प्रकट हुआ और उस फरिश्ते ने कहा, ''तुम्हारा हज कबूल हो गया है।''

जो व्यक्ति ईमानदारी से खून-पसीने की कमाई से अपना पेट पालता है और दूसरों की मदद करता है वह रूहानी मार्ग की चढ़ाई के

लायक है। एक बार क्राईस्ट लोगों के साथ बैठे हुए थे उनकी माता आकर उनके पीछे बैठ गई। किसी ने क्राईस्ट से कहा कि आपकी माता आई है। क्राईस्ट ने कहा, ''सभी मेरे भाई, बहन और माताएं हैं।''

जब हमारे सतगुरु अपने गाँव गए तो गरीब लोग भी उनके पास आए आपने उनकी खातिरदारी की। जो दूसरों की सेवा करता है और दूसरों के लिए जीता है वह सही इंसान है। आप थोड़े से शुरू करें चाहे वह आपकी आमदनी का दसवां हिस्सा है या चालीसवां हिस्सा है लेकिन कुछ न कुछ अवश्य दें।

यहाँ सब हिसाब-किताब रखा जाता है और नियमित रूप से चार्टड एकाउंटेन्ट से चैक करवाया जाता है जिससे मुझे कुछ लेना-देना नहीं है। मेरे लिए मेरी पेंशन की आमदनी ही काफी है। एक बार हिसाब-किताब की जाँच हो रही थी उस समय एक गरीब महिला एक पैसा लेकर आई एकाउंटेन्ट ने कहा, ''कोई पचास रूपये देता है कोई सौ रूपये देता है लेकिन इस महिला की यह सेवा सबसे ज्यादा कीमती है।''

मैंने यहाँ नियम बना रखा है कि जो लोग तीस-चालीस रूपये से अधिक देना चाहते हैं वह पहले मेरे पास आएं। मैं देखूंगा कि वह इतने रूपये देने के लायक हैं या नहीं? कभी-कभी हम भक्ति के वश होकर अपने बाल बच्चों के पालन-पोषण की कुर्बानी करके सब कुछ दे देना चाहते हैं। जो थोड़ा देते हैं उनका स्वागत है उनकी सेवा को बड़ी इज्जत के साथ स्वीकार किया जाता है। मैंने देखा है कि कुछ लोग इतना धन देने की स्थिति में नहीं होते वे गुप्तदान के रूप में सेवा भेजना चाहते हैं।

मैं कभी-कभी मना कर देता हूँ और कभी आधा ही स्वीकार करता हूँ। कुछ लोग भक्ति के वश होकर सेवा देकर अपने परिवार की देखभाल नहीं करते। एक आदमी एक सौ पचास रूपये महीना दिया करता था जबकि उसकी मासिक आमदनी दो सौ रूपये से ज्यादा नहीं

थी। जब मैंने मामले की जांच की तो पता चला कि उसने गुप्त दान दिया था। मैंने सतसंग के दौरान उस आदमी को अपने पास बुलाया। मैंने उसके पैसे अपने पास रखे हुए थे, वह पैसे उसे वापिस दे दिए।

शिष्य की यह रीति है कि वह सब कुछ गुरु को अर्पित कर दे और गुरु की यह रीति है कि वह शिष्य से अपने लिए कुछ न ले। शिष्य सतगुरु को भले काम के लिए धन दे सकता है लेकिन सतगुरु को भी देखना चाहिए कि वह कितना देने में समर्थ है अगर शिष्य अपने बाल-बच्चों की भलाई नहीं देखता तो यह अच्छा नहीं।

मैंने यहाँ पर यह नियम बना रखा है कि जो निश्चित धनराशि से अधिक देना चाहते हैं पहले वे मेरे पास आएं। एकाउंटेन्ट दिलीप सिंह को खास हिदायत की गई है कि वह दस, बीस, तीस रूपये तक स्वीकार कर सकता है लेकिन जो लोग अधिक धन देना चाहते हैं उन्हें मेरे पास भेजा जाए। मैं कभी स्वीकार कर लेता हूँ कभी स्वीकार नहीं करता कभी आधे पैसे लौटा देता हूँ। हमें अपनी हैसियत के अनुसार दूसरों की मदद करनी चाहिए। जो दसवां हिस्सा नहीं दे सकते उन्हें चालीसवां हिस्सा देना चाहिए; वे एक पैसे से भी मदद कर सकते हैं।

आप जानते हैं कि मैं ऐसे लोगों का धन स्वीकार नहीं करता जिन्हें 'नामदान' नहीं मिला। कौन जानता है कि वे कैसे कमाते हैं? उनकी संभाल कोई नहीं करता, वे जब देंगे तो उसके बदले में कुछ देना पड़ेगा। जिसे नामदान मिल जाता है सतगुरु उसकी संभाल करते हैं। इस आशा से दान नहीं देना चाहिए कि आपको अगले जन्म में कुछ मिलेगा।

हम सब परमात्मा के बच्चे हैं। हम सब परमात्मा के दरबार में भाई-बहन हैं। ये बातें ग्रन्थों में नहीं समझाई गई, आप खुद के लिए कुछ भी स्वीकार न करें। ईमानदारी से रोजी-रोटी कमाकर दूसरों की मदद

करें अगर आप अपने परिवार की हालत के मुताबिक अधिक धन दे सकते हैं तो आप परमात्मा के लिए सब कुछ अर्पित कर सकते हैं।

पेशावर में एक बाबा काहन थे। महाराज सावन सिंह जी जब बाबा काहन के पास जाते तो उन्हें दस रूपये दिया करते थे। बाबा काहन वह पैसे गरीबों में बाँट दिया करते थे। एक बार महाराज सावन सिंह जी मैदानी सेवा पर गए, वहाँ से उन्हें एक हजार या दो हजार की कमाई हुई। उस समय आप जब बाबा काहन के पास गए तो बाबा काहन ने सावन सिंह जी से कहा, ''इस बार मैं तुमसे बीस रूपये लूंगा।'' महाराज सावन ने कहा, ''बाबा! क्या आप लालची हो गए हैं?'' बाबा काहन ने कहा, ''बिल्कुल नहीं! इस बार तुमने ज्यादा पैसा कमाया है। मैं चाहता हूँ कि उसका ज़हर निकल जाए और यह पैसा दूसरों की मदद में लग जाए।'' बाबा काहन अपने लिए कुछ नहीं लिया करते थे।

अगर हम कुछ देकर उसके बदले में कुछ चाहते हैं तो यह निस्वार्थ सेवा नहीं है। आपकी डायरी में इसके लिए एक जगह रखी गई है जिसका मतलब है यह आपकी भलाई के लिए है। आप लोग **धन की सेवा** का अर्थ समझ गए होंगे।

अगर हम कुछ देकर उसके बदले में कुछ चाहेंगे तो क्रिया की प्रतिक्रिया होगी। जिस माता के बच्चे भूखे हों वह स्वयं के मुँह से निवाला निकालकर अपने बच्चों को दे देगी लेकिन बदले में कुछ भी पाने की इच्छा नहीं करेगी। आप इस तरह का दृष्टिकोण अपनाकर दूसरों की मदद करें। हम कभी नाम और प्रसिद्धि के लिए दिखावे का दान देते हैं यह **धन की सेवा** नहीं है।

क्राईस्ट ने कहा है, ''एक हाथ से दान दें तो दूसरे हाथ को भी पता नहीं लगना चाहिए।'' यह **धन की सेवा** का मतलब है।

* * *

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरुमुख की विनम्रता

गुरु नानकदेव जी की बानी DVD-519 पोटर व्हैली–अमेरिका

आज आपके आगे गुरु नानकदेव जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है। गुरु नानकदेव जी ने दस जामों में अपनी ज्योत एक-दूसरे में रखकर प्रचार किया। आप इस शब्द के अंदर खोलकर बताते हैं कि गुरुमुख के दिल में कितनी नम्रता होनी चाहिए और गुरुमुख बनने के लिए किन गुणों को धारण करना चाहिए?

यह मत अपने आपको सुधारने का मत है। किसी के ऐब देखने का मत नहीं बल्कि अपने ऐब छोड़ने का मत है। जो आत्माएं गुरुमुख बनती है उनमें शुरू से ही सच बोलने की और अपने ऐब छोड़ने की आदत होती है। ऐसी आत्माएं परमात्मा को पाने के लिए कोई भी कुर्बानी करने से पीछे नहीं हटती।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि मैं कालेज छोड़कर नया-नया नौकरी में गया था। उस समय हिन्दुस्तान पर इंग्लैंड के अंग्रेजों का राज्य था। जब मैं अंग्रेज आफिसर को चार्ज दे चुका तो मैंने उससे कहा, ''मैं आपसे एक वस्तु माँगता हूँ आप मुझे वह दें। लेकिन मैं आपसे ऐसी कोई वस्तु नहीं माँगता जिससे आपके चार्ज में कोई रूकावट पड़े।''

वह अंग्रेज मेरे ऊपर बहुत मेहरबान था। उसने कहा, ''तू चार्ज देने से पहले बताता तो मैं तेरी मदद करता, अब तो मैंने लिखित रूप में चार्ज ले लिया है अब मैं तुझे क्या दे सकता हूँ?'' महाराज सावन ने कहा, ''मैं आपसे ऐसी कोई वस्तु नहीं माँगता। मैं यह माँगता हूँ कि मेरे अंदर जो भी ऐब हैं वे आप मुझे लिखकर

दें ताकि मैं उन्हें छोड़ सकूँ, मेरा जीवन सुधर जाए।'' वह हँसकर कहने लगा कि ऐसी वस्तु तो आज तक मुझसे किसी ने नहीं माँगी लेकिन मैं भरोसे के साथ कहता हूँ, ''तू जिंदगी में सितारा बनकर चमकेगा।'' हाँलाकि उस समय तक आपको बाबा जयमल सिंह जी नहीं मिले थे। आप देख सकते हैं आपको ऐसे कितने आदमी मिलेंगे जो सच्चे दिल से यह कहें कि आप हमें हमारे ऐब बता दें?

मैं कई बार अपने पिता के मुत्तलिक बताया करता हूँ कि आप अच्छे थे आपको दान करने की काफी आदत थी लेकिन दान इस हिसाब से करते कि मैं अगले जन्म में लूँगा। आपने सुन रखा था कि जो यहाँ गरीबों की मदद करते हैं उन्हें स्वर्ग मिलते हैं। आप सरकारी परनोट पर लिखवाकर लेते उस पर ब्याज भी लगाते लेकिन वापिस कुछ भी नहीं लेते। पता नहीं! मन किस वक्त इंसान को धोखा दे देता है।

एक आदमी कुछ वक्त के बाद पैसे लौटाने आया वह पैसे तो दे गया लेकिन उस समय मेरी माताजी घर पर नहीं थी। परनोट मेरी माता के पास अंदर अलमारी में रखा हुआ था। उस आदमी ने कहा, ''कोई बात नहीं मैं परनोट फिर ले जाऊँगा।'' वह आदमी साल, ड़ेढ साल तक परनोट लेने नहीं आया। एक दिन मेरे पिता जी का उसके साथ बातों-बातों में झगड़ा हो गया।

मन ने धोखा दे दिया मेरे पिता जी ने उसके ऊपर सरकारी दावा कर दिया कि यह मेरे पैसे नहीं देता। गर्वमेन्ट ने उस जट को पकड़ लिया और कहा कि तुझे ये पैसे देने पड़ेंगे।'' उस जट ने अफसर से कहा, ''देखो जी! मैंने इनके पैसे तो दे दिए हैं अब यह नाजायज़ माँगते हैं लेकिन परनोट वाक्य ही इनके घर में है।''

मैं बताया करता हूँ कि मेरी माता जी अच्छी आत्मा थी। वह जट मेरी माता जी के पास हमारे घर आया। मेरी माता ने उस जट से कहा, ''मैं तुझे पैसे दे देती हूँ तू यह पैसे अदालत में जाकर रख देना और उस अफसर से कहना अगर इसने पैसे नहीं लिए तो यह अपने लड़के के सिर पर हाथ रखकर यह पैसे उठा ले।''

मन काफी हद तक बन्दे से बुराई करवाते वक्त कसर नहीं छोड़ता। जब मेरे पिताजी अदालत में गए तो अफसर साहिबान ने कहा, ''अगर तू अपने लड़के को यहाँ ले आए, अपने लड़के के सिर पर हाथ रखकर कसम उठा ले कि मुझे पैसे नहीं मिले तो यह पैसे पड़े हैं तू ले जा।'' पिताजी ने कहा, ''तू कानूनी कारवाई कर, अदालत के अंदर लड़को का क्या काम?'' अफसर ने कहा,''कसम खाए बिना तुझे पैसे नहीं मिलेंगे।''

मेरे पिताजी ने घर आकर मुझसे कहा कि तू मेरे साथ अदालत में चल। मैंने पिता जी से कहा, ''मैं आपको नर्क में नहीं जाने देना चाहता।'' आखिर मेरे पिता जी बहुत गुस्सा हुए उन्होंने मुझे एक-दो थप्पड़ भी मारे और कहने लगे, ''तू मेरा कहना नहीं मानता, तू मेरा लड़का नहीं।'' मैंने उनसे कहा, ''यह बाप-बेटे का झगड़ा नहीं, यह सच और झूठ का झगड़ा है। मैं नहीं चाहता कि आपकी आत्मा को कोई दाग लग जाए, आज तक आपकी जिंदगी प्योर और पवित्र रही है।''

बचपन से ही परमात्मा ने ऐसी आत्माओं के अंदर सच रखा होता है। वक्त आने पर जब सावन-कृपाल ने अन्त समय में मेरे पिता की संभाल की उस वक्त मेरे पिता ने कहा, ''मेरा लड़का किसी हद तक बचपन से ही मेरी मदद करता आया है।'' जब यह वाक्या हुआ उस वक्त मेरी आयु आठ-नौ साल की थी।

मंज कुचज्जी अंमावण डोसड़े हौं क्यों सौह रावण जाओं जीओ।।

आत्मा अपने आप से सवाल करती है कि मैं परमार्थ में अच्छी नहीं, मेरे अंदर कोई अच्छा ढ़ंग नहीं, मेरे अंदर अनगिनत ऐब और पाप हैं। मैं किस तरह परमात्मा से मिल सकती हूँ? परमात्मा रूप गुरु नानकदेव जी ने यह भजन लिखा है। आप अपने दिल में झाँककर देखें! महात्मा परमात्मा से मिलकर भी दम नहीं मारते। महात्मा इस मण्डल में आकर यही कहते हैं कि हमारे अंदर अनगिनत पाप-ऐब हैं जिनकी गिनती नहीं की जा सकती तो किस तरह परमात्मा दरवाजा खोलेगा?

इक दू इक चढ़ंदीआं कौण जाणै मेरा नाओं जीओ।।

आत्मा कहती है, ''मैं किसको दोष दूँ, सब मुझसे अच्छी हैं। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि अभ्यास करके उस परमात्मा के दर पर पहुँचे हुए हैं, ये सब आत्माएं मुझसे अच्छी हैं।''

मैंने एक भजन में बताया है कि हे कृपाल! कुल-मालिक मेरी फरियाद सुन, तू पीरों का पीर है। मैं तेरे दर पर आया हूँ मेरे जैसी आत्मा तुझे लाखों-करोड़ों मिल सकती हैं पर तेरे जैसा दयालु गुरु मुझे कोई नहीं मिलेगा। तू मेरा बदियों वाला कागज मत खोल। मैं तेरे दर पर आया हूँ तू मुझे दर से वापिस न भेज अगर हमारे अंदर गुनाह न होते तो तुझे बख्शनहार किसने कहना था? तू गुनाह की तरफ नहीं देखता बख्श देता है तभी तेरा नाम बख्शनहार पड़ा है। मैंने अपने गुरु के आगे यही कहा था कि मैं तेरा तिल-तिल का अपराधी हूँ, रत्ती-रत्ती का चोर हूँ। पल-पल गुनाह करता हूँ तेरे दर पर आया हूँ तू मुझे बख्श दे।

महाराज सावन कहा करते थे, ''जब हम गुनाह करके माफी माँगने के लिए तैयार नहीं तो माफ करने वाला क्या करेगा?''

जिन्हीं सखीं सौह राविआ से अंबीं छावड़ीऐंह जीओ।।

आप कहते हैं, ''जिन आत्माओं ने मन का साथ नहीं लिया, कुर्बानी करके अंदर पहुँची परमात्मा से मिली। उन्हें परमात्मा ने अंदर सचखंड में आम के पेड़ जैसी ठंडी छाँव और शांतमय देश दिया। इस दुनिया में भी परमात्मा ने उनके ऊपर कितनी दया की। आम के पेड़ की छांव मशहूर होती है। खासकर हमारे राजस्थान में तो इसकी ज्यादा से ज्यादा कद्र होती है।''

से गुण मंज न आवनी हौं कै जी दोस धरेओं जीओ।।

आत्मा कहती है, ''मैं किसको दोष दूँ? जो आत्माएं परमात्मा से मिली हैं मेरे अंदर उन जैसे गुण नहीं। मेरे अंदर ऐसे ख्याल नहीं। मेरा ऐसा वेश नहीं और मेरा ऐसा ढ़ंग नहीं कि मैं उस गुरु परमात्मा को खुश कर सकूँ।''

क्या गुण तेरे विथरां हौं क्या क्या घिंनां तेरा नाओं जीओं।।

आत्मा कहती है, ''मैं तेरे कौन-कौन से परोपकार का जिक्र करूँ। कोई ऐसा लफ्ज़ नहीं जो तेरे गुणों को, तेरी महिमा को ब्यान कर सके। मैं तेरी रहमत का किस तरह शुक्र-गुजार होऊँ? मैं तेरे नाम की क्या महिमा करूँ क्योंकि जो नाम को प्राप्त कर लेते हैं उन्हें नाम की महिमा का पता है।''

सहजो बाई कहती है, ''अगर मैं त्रिलोकी की सारी संपदा भी न्यौछावर कर दूं तो भी गुरु के नाम का मूल्य नहीं दे सकती।'' हम मन-इंद्रियों की गुलामी छोड़ने के लिए तैयार नहीं। हमें फिलहाल नाम की महिमा का ज्ञान नहीं। परम सन्त कबीर साहब कहते हैंः

कहत कबीर निर्धन है सोई, जाके हृदय नाम ना होई।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''वही सच्चे शहंशाह हैं जिनके पल्ले नाम है।'' गुरु अर्जुनदेव जी ने सुखमनी में कहा हैः

हर धन के भर लेयो भण्डार,नानक गुरु पूरे नमस्कार।

इकत टोल न अंबड़ां हौं सद कुरबाणै तेरै जाओं जीओ।।

हे सतगुरु ! मैं तेरे ऊपर कुर्बान जाती हूँ तूने नाम देते हुए मेरा एक भी पाप नहीं देखा। तूने वह बख्शीश की जो हम सोच भी नहीं सकते थे। वह बख्शीश बाजारों में मूल्य देने से नहीं मिल सकती थी, इसे हम किसी हुकूमत से प्राप्त नहीं कर सकते थे। यह तूने अपनी दया की बख्शीश की है।

सोयना रूपा रंगला मोती तै माणक जीओ।।
से वस्तू सह दित्तीआं मैं तिन्ह स्यों लाया चित जीओ।।

आत्मा अब उस परमात्मा गुरु के आगे फरियाद करती है कि तूने मुझे सोना दिया, चांदी दी, बहुत मान-बड़ाई दी। रहने के लिए अच्छे-अच्छे महल दिए लेकिन मैंने इनमें ही दिल लगा लिया। मैं इन्हीं में फँसकर तुझे भूल गई। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

दात प्यारी विसरया दातारा।

मौहम्मद साहब के दिल में यह था कि मेरे जाने के बाद मेरे सेवक आपस में झगड़ा न करें कि मैं कलमा देने का हकदार हूँ, इनकी जायदाद का वारिस हूँ। आमतौर पर हम लोग जायदाद के लिए झगड़े खड़े कर लेते हैं। आपने अपने सेवकों से पूछा, ''आप सब बताएं कि आपके पास क्या है?''

हजरत उमर ने खड़े होकर बताने में एक घंटा लगा दिया कि मेरे इतने बेटे हैं, इतनी बेटियाँ हैं, मेरी इतनी दौलत है, मेरे इतने

ऊँट हैं। जब हजरत अली की बारी आई, हजरत अली अंदर जाता था मौहम्मद साहब की पोजीशन को समझता था। उसने दो लफ्जी बात की, ''मेरा तो तू ही है और कौन हो सकता है?'' मौहम्मद साहब ने सबको थोड़े से इशारे से समझा दिया कि मेरी तालीम को कौन समझता है। मौहम्मद साहब ने कहा, ''अली! तू बहादुर है। तू जिसको कलमा देगा मैं उसकी संभाल करूँगा।''

मंदर मिट्टी संदड़े पत्थर कीते रास जीओ।।
हौं एनी टोलीं भुलीअस तिस कंत न बैठी पास जीओ।।

अब आत्मा कहती है, ''मंदिर, महल कीमती पत्थरों के हैं। आखिर पत्थर यहीं छोड़ जाने हैं, ये सब मिट्टी के बने हुए हैं। मैं इनमें से मन निकालकर एक सैकिंड भी परमात्मा कन्त के पास नहीं बैठी। उसके साथ बात करने की नहीं सोची। सारा दिन सारी जिंदगी इन मंदिर, महलों, दौलत, कुल-कुटुंब को देखकर ही खुश होती रही।'' महात्मा बताते हैंः

काह नूं करदैं मेरी मेरी, साड्डे त्रे हत्थ धरती तेरी।
ओढ़क पौने चार घनेरी, जे कर पैर पसारे तूं।।

अंबर कूंजां कुरलीआं बग बहिठे आय जीओ।।
सा धन चल्ली साहुरै क्या मुँह देसी अग्गै जाय जीओ।।

अब आत्मा कहती है, ''जब ऊपर से शब्द की धुनें आती हैं तब ये काम, क्रोध बगुले आकर बैठ जाते हैं अगर हम बगुले की तरह भक्ति करते हैं तो परमात्मा दरवाजा नहीं खोलेगा वह अंदर बैठा है, वह अंतर्यामी है।'' महात्मा चतुरदास कहते हैंः

सुन्दर रूप महा बगुले का एक टंग जल ध्यान।
मन में आसा मीन गहन की कहाँ मिले भगवान।।

सुत्ती सुत्ती झाल थीआ भुली वाटड़ीआस जीओ।।
तैं सह नालों मुतीअस दुक्खां कूं धरीआस जीओ।।

आप कहते हैं, ''यह जिंदगी पचास-साठ साल की है यह सपने की तरह बीत जाती है। उस वक्त ही होश आती है जब काल आकर कानों से पकड़ लेता है बिना बुलाए ही मौत आ जाती है।'' अब आत्मा कहती है, ''मैं पति से मिलना चाहती थी लेकिन सोते हुए ही दिन चढ़ गया पता ही नहीं चला कि कब उम्र बीत गई। मैं जब से परमात्मा से बिछड़ी हूँ मैनें सिर पर दुःखों के भार रख लिए हैं, न दिन को चैन है न रात को चैन है।'' फरीद साहब कहते हैंः

ऊठ फरीदा सुत्तया, झाड़ू दे मसीत।
तू सुत्ता रब जागदा तेरी डाढे नाल प्रीत।।

मसीत इस शरीर को कहा गया है और सच्चा मंदिर भी इसको ही कहा गया है। सिमरन का झाड़ू देने को कहा है कि तू सोया हुआ है और दम यह भरता है कि मेरा परमात्मा के साथ प्यार है। यह कैसी प्रीत है कि प्यारा जागता है और जो दम भरता है वह सोया हुआ है। जब हम सिमरन का झाड़ू देते हैं तब ये बगुले भक्त काम, क्रोध अंदर से निकल जाते हैं।

तुध गुण मैं सभ अवगणा इक नानक की अरदास जीओ।।

सारा शब्द कहकर गुरु नानक साहब कहते हैं कि आत्मा यह कहती है, ''तेरे अंदर सारे गुण हैं और मेरे अंदर सारे ही ऐब भरे हुए हैं। मैं सच्चे दिल से तेरे आगे अरदास करती हूँ कि तू मुझे बख्श दे। मैं तेरे दर पर आई हूँ तू दर पर आई हुई की लाज रख।''

सभ रातीं सोहागणी मैं डोहागण काई रात जीओ।।

आत्मा कहती है, ''सब सखियाँ जिन्होंने मेरे साथ नामदान प्राप्त किया था वे पति से मिल गईं, सुहागन हो गई हैं। एक मैं ही ऐसी निकम्मी थी जो दोहागन रही अपने पति को खुश नहीं कर सकी उससे मिल नहीं सकी।'' महात्मा कहते हैंः

सज्जन दर्शन देंदा नाहीं, रो-रोकर मैं हारी हां।
ना गुण, ना ढ़ंग पल्ले कीकण लग्गा प्यारी हां।।

सन्त-महात्मा परमात्मा को अपना पति समझते हैं और आत्मा को उसकी स्त्री समझते हैं। जिस तरह दुनिया में मियाँ-बीवी मिलकर खुश होते हैं उसी तरह आत्मा और परमात्मा मिलकर खुश होते हैं। हमें भी चाहिए की अंदर तरक्की करने के लिए एक-एक अवगुण गिनकर छोड़ दें।

महाराज कृपाल ने हमारे ऊपर बड़ी दया करके डायरी रखने का ढ़ंग बताया कि आप इसमें अपने ऐब लिखें। मैं कहा करता हूँ कि आज आपने जो ऐब लिख लिया है कल वह ऐब नहीं होना चाहिए। बहुत से प्रेमियों की डायरियाँ देखने का मौका मिलता है लेकिन आमतौर पर वही गलती दूसरे दिन भी होती है। महीना भर वही गलतियाँ चलती जाती हैं।

आप सोचकर देख सकते हैं कि हम किस तरह तरक्की कर सकते हैं? जब हम रोज़ गलती करते हैं फिर डायरी में लिख लेते हैं फिर गलती करते हैं फिर डायरी में लिख लेते हैं। हमने डायरी को एक रस्मों-रिवाज़ बना लिया है।

***

3 मई 1985

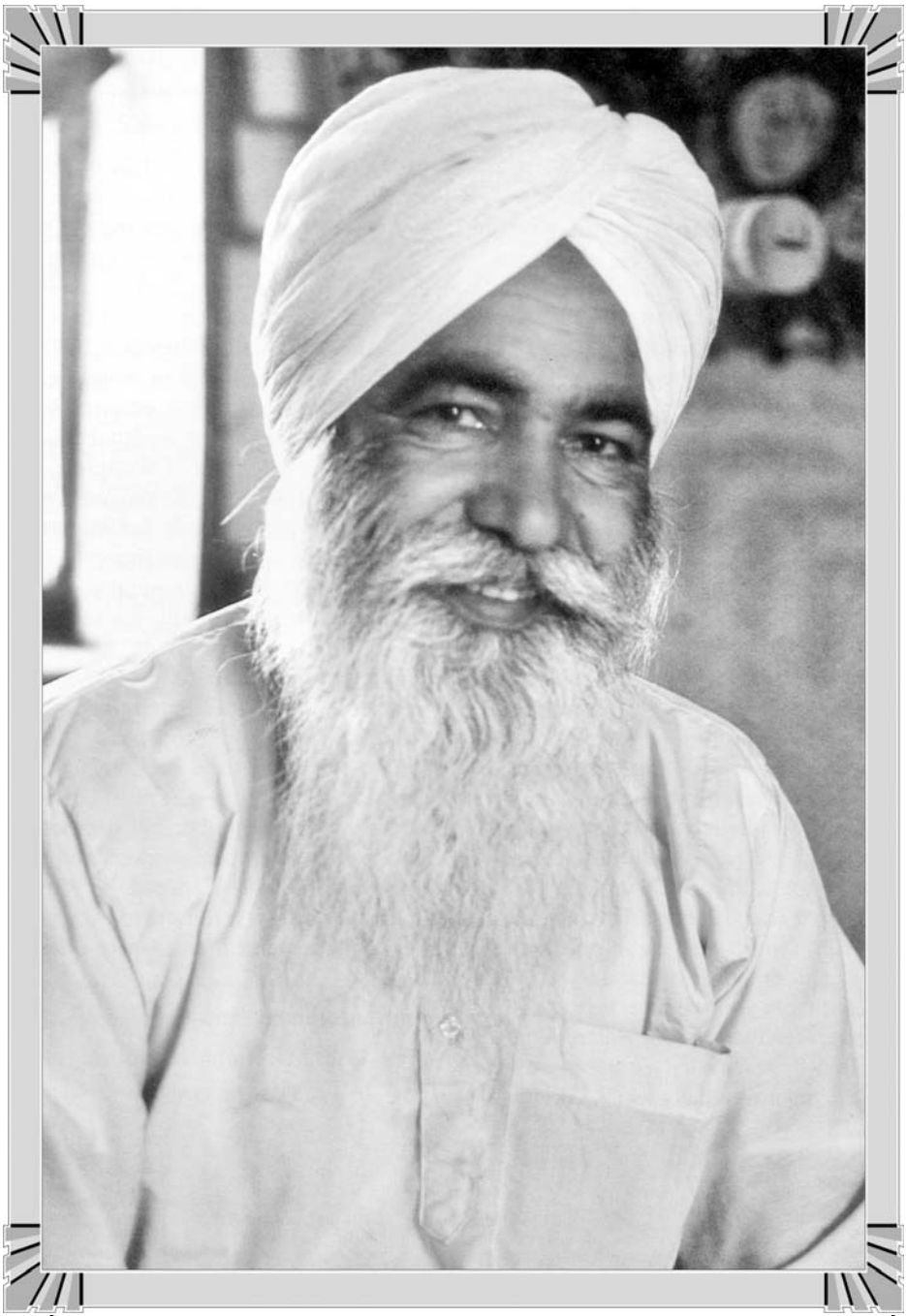

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से भजन–अभ्यास में बिठाने से पहले

मन को शान्त करें

अभ्यास को बोझ न समझें प्रेम प्यार से करें। अभ्यास के वक्त बाहर की किसी भी आवाज की तरफ ध्यान न दें। मन को तीसरे तिल पर एकाग्र करें। जिन प्रेमियों को तीसरे तिल को ढूंढ़ने में समस्या होती है मैं उनके लिए बताया करता हूँ कि हमेशा ही जब आप आँखें बंद करते हैं तो जो कुछ भी अंदर देख रहे होते हैं वह आपकी तीसरी आँख ही देख रही होती है।

ध्यान को एकाग्र करते वक्त कभी ख्याल को नीचे कभी ऊपर कभी दाँए तो कभी बाँए न जाने दें। अभ्यास में बैठते समय आपने शुरू से ही अपना ध्यान दोनों आँखों के बीचो-बीच टिकाना है।

कुछ प्रेमियों की शिकायत है कि कभी ज्योत आती है कभी चली जाती है और किसी वक्त बहुत ही चमकीली ज्योत आती है। जब हमारा मन स्थिर होता है तो ऐसा लगता है कि ज्योत टिक रही है। जब हमारा मन स्थिर नहीं होता तो ऐसा लगता है कि ज्योत चली गई है लेकिन ज्योत नहीं जाती वह उसी जगह पर मौजूद है।

आपको पता है अगर दरिया का पानी बिल्कुल स्थिर हो तो उसके आस-पास लगे पेड़ों की परछाई पानी में बड़ी आसानी से दिखाई देती है जो देखने में बहुत सुंदर लगती है। जब उस पानी के अंदर बड़ी-बड़ी लहरें उठ रही होती हैं तब भी पेड़ तो वहीं मौजूद होते हैं लेकिन हम पानी में उन पेड़ों की परछाई नहीं देख सकते। जब कभी पानी में थोड़ा बहुत टिकाव आता है उस वक्त पेड़ दिखते हैं फिर जब लहर आती है तो पेड़ नहीं दिखते।

यही हालत हमारे मन की है। मन भी एक बड़ा दरिया है इसके अंदर भी दुनिया के ख्यालों की बहुत लहरें उठ रही है हमने इस मन को स्थिर करने के लिए सिमरन का चप्पू देना है ताकि हम इसके अंदर साफ देख सकें।

आमतौर पर आर्मी में बंदूक चलाने की ट्रेनिंग देते समय बताया जाता है कि आपका बदन, बंदूक और जहाँ निशाना लगाना है ये सब एक ही लाईन में होने चाहिए। बंदूक का पिछला हिस्सा बंदूक के अगले हिस्से को गोली पहुँचाने का जिम्मेदार होता है। हाथ की अंगुली ट्रिगर के अंदर दाखिल होती है उनको एक लाईन में रखकर गुलजरी के सेंटर में मिलाकर साँस को भी इधर-उधर न जाने दें और आहिस्ता से अपनी मुट्ठी को बंद करें ताकि बंदूक चलाते वक्त झटका न लगे; वह निशाना बिल्कुल सही जाता है।

कुछ लोग कभी इधर झाँक लेते हैं कभी उधर झाँक लेते हैं। बंदूक कहीं, टार्गेट कहीं, बदन कहीं और देखते कहीं और हैं उन्हें पता ही नहीं चलता कि गोली कब चल गई और कहाँ जाकर लगी, ऐसे लोग फेल हो जाते हैं। जो लोग ट्रेनिंग में दी गई हिदायत के मुताबिक चलते हैं वे पास हो जाते हैं।

यही बात सन्तमत के अभ्यास में भी लागू होती है। हमारी गुलजरी का टार्गेट तीसरा तिल है, सचखंड हमारी मंजिल है जहाँ हमने पहुँचना है। अगर हमारा बदन स्थिर है मन टिका हुआ है और हम अपने ध्यान को तीसरे तिल पर एकाग्र कर लेते हैं, इधर-उधर भटकने नहीं देते तो हम थोड़ी सी बैठकों में कामयाब हो सकते हैं।

जो लोग उस पोजिशन को बार-बार बदलते हैं वे फेल हो जाते हैं। मैंने खुद प्रैक्टिस की हुई है। जो एक इंच के दायरे में पाँच गोलियां मार देता था उसे ईनाम मिलता था, मैंने खुद वह ईनाम

जीता है। मेरा जातिय तजुर्बा है इस तजुर्बे ने सन्तमत के इस मुद्दे को समझने में मेरी बहुत मदद की। मेरे गुरु ने मुझे यह यकीन दिलाया कि बेटा, बार-बार ध्यान को, पोजिशन को बदलने से आपका ख्याल आपके अभ्यास के शुरूआत से ही पल-पल भंग होता रहेगा, इस बात को समझने पर जोर देना चाहिए।

मैं कहा करता हूँ कि जब हमारे ख्याल टिक जाएंगे उस वक्त हमारे अंदर ज्योत टिकेगी। शुरू-शुरू में कान बंद करने की आदत होती है। उसके बाद हमारे अंदर घंटियों की आवाज, शंख की आवाज या कोई भी आवाज लगातार आनी शुरू हो जाती है। आप जिस आवाज को रोज सुनते हैं उसे तब्दील न करें क्योंकि छोटी आवाजों का कनेक्शन ऊँची आवाजों के साथ होता है।

जब आत्मा प्रकाश को देखती है और घंटे की आवाज को सुनती है तब इसके ऊपर चढ़ी हुई मैल साफ होनी शुरू हो जाती है। आत्मा का शीशा साफ होकर चमक उठता है और मन-इन्द्रियों की तारें जो आत्मा को नीचे खींचती हैं वे एक-एक करके टूटनी शुरू हो जाती हैं। उसके बाद हम जब भी अभ्यास में बैठते हैं फौरन हमारा ख्याल ऊपर शब्द की तरफ चला जाता है।

मैं आशा करता हूँ कि मैंने आपको जो कुछ समझाने की कोशिश की है आप उसी तरह अभ्यास में बैठेंगे। चाहे यहाँ बैठें, चाहे अपने देश में जाकर बैठें इसी तरह बैठें। इस तरह बैठने से कामयाबी जरूर नसीब होगी। हाँ भई! भजन-अभ्यास में बैठें।

***

4 अप्रैल 1985

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

आओ! करो और देखो

इंसान को अच्छा या बुरा बनाने वाली सोहबत-संगत है। कभी भी बुरे आदमियों की सोहबत-संगत न करें, सदा ही भले पुरुषों की सोहबत करें। बेशक शराब बेचने वाले के हाथ में दूध हो लेकिन देखने वाला उसे शराब ही समझेगा।

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे हमें हमेशा ही चेतावनी देते हैं कि बुरे लोगों की संगत में पड़कर बुरे न बनें। हमेशा याद रखें कि इंसानी जामा बहुत अमोलक है। अच्छे लोगों की संगत में रहकर अच्छे बनें। चोर-डाकुओं की संगत में रहकर हम चोर-डाकू ही बनेंगे। अपने ऊपर और अपने बच्चों पर तरस करें कोई ऐसा काम न करें जिससे हमारी कौम, वंश, मुल्क की बदनामी हो। हमें अपनी आत्मा पर रहम करना चाहिए।

एक बार पैगम्बर लुकमान अपने बेटे को अच्छी संगत के बारे में समझा रहे थे, ''बेटा! तुम जिस लड़के की सोहबत-संगत कर रहे हो उसकी हरकतें अच्छी नहीं अगर तुम उसकी संगत में रहोगे तो तुम्हें भी वैसी ही आदतें पड़ जाएंगी।'' लड़के ने कहा, ''मैं बहुत समझदार हूँ मेरे ऊपर उसका कोई असर नहीं पड़ेगा।'' लुकमान साहब ने कहा, ''बेशक तू समझदार है लेकिन तेरे ऊपर उसका असर अवश्य होगा और तू भी उस जैसा ही बन जाएगा।''

पैगम्बर लुकमान बहुत समझदार थे। उन्होंने अपने बेटे के हाथ में एक कोयला रखकर कुछ समय बाद वह कोयला फिंकवा दिया। लड़के ने देखा कि उसका हाथ काला हो गया है। पैगम्बर साहब ने कहा, ''कोयला हाथ में रखने से तेरा हाथ काला हो गया

है इसी तरह ऐसा नहीं हो सकता कि बुरी संगत में रहकर तुझ पर उसका असर न हो।''

जब इंसान कत्ल करके फाँसी के तख्ते पर चढ़ता है अगर उस वक्त वह कहे कि मेरे साथ बुरा सलूक न करें, मुझे सजा न दें। तब धर्मराज कहता है कि तू बुरों की संगत करके बुरा बन गया है, अब तेरे बुरे कर्मों की यही सजा है।

एक आदमी ने वरुण देवता की बहुत कठिन तपस्या की। वरुण देवता ने खुश होकर उसे एक बहुत कीमती हीरा दिया। उसने हीरे को अपनी गुदड़ी में सिल लिया। वह उस गुदड़ी को हमेशा अपने पास रखता था।

एक बार वह कहीं जा रहा था। रास्ते में उसे चार-पाँच ठग मिले। उन ठगों ने देखा कि यह देखने में तो गरीब लगता है लेकिन बहुत खुश नज़र आ रहा है, इसके पास जरूर कुछ है। उन ठगों ने उससे पूछा, ''तुझे किस तरफ जाना है?'' उसने कहा, ''मैं पूर्व से आ रहा हूँ और पश्चिम की तरफ जाना है।'' उनमें से एक ठग कह-कहाकर हँसा और कहने लगा, ''जब परमात्मा मेल मिलाता है तो अपने आप ही इंतजाम कर देता है। यह तो हमारा ही साथी निकला, हमें भी उसी तरफ जाना है।'' वे ठग भी उसके साथ चल पड़े।

वह गरीब आदमी अपनी गुदड़ी को संभालता रहा कि इसमें हीरा है और मैं इन लोगों को नहीं जानता। ठग समझ गए कि जो कुछ है इसकी गुदड़ी में ही है। एक दिन उन ठगों ने उसे एक टका देकर कहा, ''तू बाजार से जाकर कुछ सामान ले आ।'' जब वह बाजार से सामान ले आया तो ठगों ने हिसाब लगाकर कहा कि दुकानदार ने तुझे एक कौड़ी कम दी है, जल्दी से जाकर ले आ कहीं वह दुकानदार मुकर न जाए। जब वह भागकर जाने लगा तो ठगों ने उससे कहा, ''तू अपनी गुदड़ी यहीं पर रख जा। तुझे भागकर

जाने में दिक्कत होगी।'' वह जल्दबाजी में अपनी गुदड़ी वहीं छोड़कर चला गया कि कहीं दुकानदार मुकर न जाए। जब उसने दुकानदार के पास जाकर हिसाब किया तो हिसाब ठीक निकला। वह भागकर उसी जगह वापिस आया तो वहाँ न ठग थे न ही उसकी गुदड़ी थी। वह बहुत पछताया और रोकर कहने लगाः

बहुत बरस तप साध के, मिलया हीरा एक।
कौडी बदले खो दिया, ते होया कलेजे छेक॥

जिस तरह उस भक्त ने भक्ति करके वरुण देवता से हीरा प्राप्त किया उसी तरह जब हम कई जन्मों में भक्ति करते हैं तो परमात्मा हमें इंसानी हीरा-जन्म देता है। हमें यहाँ काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के ठग मिल जाते हैं। ये ठग हमें फँसा लेते हैं फिर हम इनसे छूट नहीं सकते। शुरू-शुरू में ये बड़े प्यार से दोस्ती करते हैं। काम कहता है कि हम औलाद ही पैदा कर रहे हैं कोई गलत काम नहीं कर रहे, औलाद तो ऋषि-मुनि भी पैदा करते आए हैं। कबीर साहब कहते हैंः

मरे बिना तुम छूटे नाहीं, जीवत जी तू सुने न कान।

हम जब तक मरते नहीं ये पाँचों ठग हमारी जान नहीं छोड़ते। जिस तरह ठगों ने उस गरीब से हीरा छीन लिया था उसी तरह हमारी आत्मा भी गरीब है। 'नाम' हीरा है। ये ठग इसे लूट लेते हैं तरक्की नहीं करने देते। सतसंगी रोता-पीटता है कहता है कि अब मुझे प्रकाश दिखाई नहीं दे रहा मेरी चढ़ाई नहीं हो रही। इस कहानी का यही तात्पर्य है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इस नाम रूपी हीरे को ठग लेते हैं।

विसमादु नाद विसमादु वेद॥ विसमादु जीअ विसमादु भेद॥
विसमादु रूप विसमादु रंग॥ विसमादु नागे फिरहि जंत॥
विसमादु पउणु विसमादु पाणी॥ विसमादु अगनी खेडहि विडाणी॥

विसमादु धरती विसमादु खाणी॥ विसमादु सादि लगहि पराणी॥
विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु॥ विसमादु भुख विसमादु भोगु॥
विसमादु सिफति विसमादु सालाह॥ विसमादु उझड़ विसमादु राह॥
विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि॥ विसमादु देखै हाजरा हजूरि॥
वेखि विडाणु रहिआ विसमादु ॥ नानक बुझणु पुरै भागि॥

गुरुमुखों की अवस्था तीनों गुणों से ऊपर है जिसे सहज अवस्था कहते हैं। गुरुमुख सहज अवस्था में ही सोते-जागते और बातचीत करते हैं। सभी महात्माओं ने अपनी बानियों में सहज अवस्था का जिक्र किया है, ये तीनों गुण गुरुमुखों के अधीन होते हैं।

तमोगुण के समय हमारे अंदर अंहकार होता है। तमोगुण के अधीन होकर हम अपने आपको भूल जाते हैं, भाई-भाई का सिर गाजर-मूली की तरह काट देता है।

रजोगुण के समय हमारे अंदर लोभ पैदा होता है। हम चोरियाँ, ठगियाँ करके लोगों की बद्धुआएँ लेते हैं चाहते हैं कि सारी दुनिया का सोना-चाँदी हमारे घर आ जाए। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

लैंदा बद्धुआएँ तू माया करे इकट्ठ।

सतोगुण के समय इंसान सब तरफ से हटकर दान-पुण्य, जप-तप करने की सोचता है। नर्कों से डरता है और स्वर्गों की आशा करता है। कबीर साहब कहते हैंः

राम कबीरा एक भये हैं कोए ना सके पहचानी।

आप कहते हैं, ''कोई महरम ही हमारे देश को पहचान सकता है। हमारे देश में बिना बादलों के बारिश होती है, बिना सूरज के उजाला होता है, बिना साजों के शब्द-धुन होती है। वहाँ के झरनों से अमृत की ऐसी बूँदें निकल रही हैं जो न मीठी हैं न

खारी हैं। हे परमात्मा! अब तुझमें और मुझमें क्या फर्क है? मैं हर जगह तुझे ही देख रहा हूँ।''

महात्मा रविदास जी कहते हैं कि हमारे शहर का नाम बे-गम है। जो वहाँ पहुँचता है वही हमारे शहर का रहने वाला है। हमारे शहर में कोई गम नहीं। हमारे शहर में कोई टैक्स नहीं। वहाँ हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई का झगड़ा नहीं। वहाँ सदा शान्ति है, वहाँ कोई किसी में नुक्ताचीनी नहीं करता।

गुरु नानकदेव जी ने इसे विसमाद अवस्था (आनन्द की अवस्था) कहकर बयान किया है। वहाँ मौत-पैदाइश नहीं। वहाँ पहुँची हुई आत्मा कहती है, ''वह परमात्मा अकाल-मूर्त है और मैं भी अकाल-मूर्त हूँ। वह मौत से रहित है और मैं मौत से नहीं डरता। वह भगवान है मैं उसका बच्चा हूँ।''

महात्मा रविदास जी कहते हैं, ''वह आज़ाद सतसंगियों का देश है। वे सदा ही परमात्मा के दर्शनों में खुश हैं अगर भूख लगती है तो उन्हें 'शब्द-नाम' का भोजन मिलता है प्यास लगती है तो नाम का अमृत मिलता है। वहाँ का मिलाप विसमाद है, अचरज है। यह भी अपने-अपने भाग्य की बात है कि एक उस परमात्मा को अपनी देह में प्रकट कर लेता है और एक उसे मन्दिरों-मस्जिदों, जंगलों-पहाड़ों में ढूँढता फिरता है।''

सन्तों-महात्माओं का मार्ग अंधविश्वास का नहीं। वे यह नहीं कहते कि आपको परमात्मा दूसरे जन्म में मिलेगा। महात्मा कहते हैं, ''**आओ! करो और देखो।**'' लेकिन हम चाहते हैं, दुनिया के स्वाद भी न छूटें और परमात्मा भी मिल जाए। कबीर साहब कहते हैं, ''एक म्यान में दो तलवारें न देखी हैं न सुनी हैं।''

सहज अवस्था में पहुँचे महात्मा जीवन मुक्त होते हैं। महात्मा अपने सेवकों से कहते हैं, ''आपकी बहादुरी तभी है जब आप गुरु के देह में रहते हुए ही अपने अंदर शब्द की धार को प्रकट कर लें।'' गुरु के दिल में तड़प है कि ये मेरे जीवन काल में ही अपना काम बना लें और मन इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ जाएं। आप भी गुरु के मिशन में पवित्र बनने की, अभ्यास करने की कोशिश करें।

गुरु नानकदेव जी प्यार से समझाते हैं, ''यह खुशी की बात है कि जिनके ऊँचे भाग्य होते हैं वे सन्तों की बात को समझकर 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं।'' प्यारेयो! शुरू में भूखे रहना मुश्किल होता है। सेहत पर भी असर पड़ता है लेकिन बाद में सेहत पर कोई असर नहीं पड़ता।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि ताकत दुनिया के पदार्थों में नहीं, यह हमें विरासत में ही मिली है। काम की अग्नि इंसान को इस तरह भस्म कर देती है जिस तरह पतंगा दीपक पर जाकर भस्म हो जाता है। काम बड़ी आसानी से कम किया जा सकता है। आप इसका ख्याल ही न करें! आप इस जहर को चखकर ही न देखें फिर आपका ख्याल इस तरफ जाएगा ही नहीं।

कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु॥
कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु॥
कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु॥
कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु॥
कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान॥
कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु॥
कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु॥

सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु॥
नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु॥

आपने पहले परमात्मा का अचरज, विसमाद रूप बयान किया है। अब उस परमात्मा की शक्ति को बयान कर रहे हैं जिसे कुदरत भी कहते हैं। हर जगह उसकी शक्ति काम करती है। दरियाओं में पानी उसकी शक्ति से चल रहा है। धरती उसकी शक्ति से खड़ी है। खंड-ब्रह्मांड और पाताल भी उसकी शक्ति से ही कायम हैं।

उस शक्ति के अधीन होकर ही आँख में ज्योति काम कर रही है, कान में सुनने की शक्ति काम कर रही है। उसी शक्ति से जुबान और हाथ-पैर चल रहे हैं। जब वह शक्ति हममें से गायब हो जाती है तो आँखें होते हुए भी हम देख नहीं सकते, कान होते हुए भी हम सुन नहीं सकते, जुबान होते हुए भी हम बोल नहीं सकते।

परमात्मा ने अपनी शक्ति सन्त-महात्माओं में रखी होती है। उसी शक्ति से सन्त-महात्माओं ने वेद, पुराण, ग्रन्थ लिखे हैं। चाहे कोई कितना भी आलम-फाज़ल क्यों न हो लेकिन सन्तों की बानी को सन्त ही समझते हैं कि कौन सी बानी किस मंजिल की तरफ इशारा करती है। आलम-फाज़ल और गुणी-ज्ञानी इस तरह बयान करते हैं जैसे कोई नक्शा देखकर बताता है कि इस जगह शहर है इस जगह नहर है। सच्चाई यह है कि उस नक्शे में न शहर होता है न नहर होती है। सिर्फ जानकारी मिल जाती है लेकिन महात्माओं का तजुर्बा इससे उलट है। वे कहते हैं:

तुम कहते हो पुस्तक देखी, हम कहते हैं आँखों देखी।

आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ॥
वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ॥

पहले आपने परमात्मा की अचरज अवस्था को बयान किया फिर उसकी शक्ति को बयान किया। अब गुरु नानकदेव जी प्यार से बताते हैं कि जीव को दुनिया के रसों-कसों और भोगों में किसी ने नहीं फँसाया। इसने खुद ही अपनी मर्जी से भोग भोगे, बुरे कर्म किए और बीमारियाँ लगा लीं।

जीते जी शरीर खाक जैसा हो गया। शरीर को शक्ति देने वाली आत्मा के निकलते ही यमों ने इसे पकड़ लिया। चाहे कोई कितना भी शक्तिशाली हो, राष्ट्रपति हो, बहुत फौज़ों का मालिक हो, दुनिया सलामें करती हो; लेखा सभी का होता है। वहाँ हाथों में हथकड़ियाँ और गले में जंजीर होती है, राजा और गरीब में कोई मतभेद नहीं होता। जिसका जैसा कर्म होता है उसे धर्मराज उसका हिसाब समझा देता है।

मैंने ऐसे बहुत से लोग देखे हैं जो अन्त समय में सारा किस्सा भी बयान करके जाते हैं। पंजाब के कपूरथला स्टेट की रानी महाराज सावन सिंह जी की बड़ी श्रद्धालु नामलेवा थी। उसने अपने पति से कई बार कहा, ''नाम लो। नाम बिना मुक्ति नहीं गुरु बिना गति नहीं।'' राजा हमेशा ही बहाने बना देता। कभी कहता, ''लोग क्या कहेंगे कि राजा होकर कहाँ जाता है?'' लेकिन मौत किसी का इंतजार नहीं करती।

जब राजा का अन्त समय आया, मैं उस समय आर्मी में कपूरथला में ही था। राजा ने रानी से कहा, ''यमदूत मेरे हाथ जला रहे हैं, मेरे गले में जंजीर डालकर मुझे खींच रहे हैं।'' रानी ने कहा, ''मैंने आपको कई बार कहा था कि आप 'नाम' ले लें।'' आखिर रानी ने हुजूर सावन के आगे फरियाद की तब जाकर राजा की देह छूट सकी।

मैं बताया करता हूँ कि मेरा परिवार हुजूर सावन-कृपाल को नहीं मानता था। मेरे परिवार के लोग मेरा विरोध करते और कहते, ''कृपाल ने तेरे ऊपर जादू किया हुआ है।'' मैं अपने परिवार के लोगों से मेलजोल नहीं रखता था। मैं उनसे कहा करता, ''कृपाल के सिवाय आपकी मदद करने वाला कोई नहीं।''

पिछले साल दो जुलाई का वाक्या है जब मेरे भाई का अन्त समय आया। वह उस समय बीमार नहीं था। अचानक घर में आकर कहने लगा, ''मुझे चार कसाइयों ने पकड़ लिया है और वे मुझे कष्ट दे रहे हैं फिर एकदम से हुजूर का नाम लेकर बोला कि हुजूर आ गए हैं उन्होंने मुझे कसाइयों से छुड़वा लिया है।'' फिर उसने कहा, ''आप लोग अजायब को घर में लाएं उससे 'नाम' लें। मैंने तो अपनी जिंदगी ऐसे ही गँवा दी।'' यह कहकर उसने चोला छोड़ दिया।

पिछले सतसंग में मेरे परिवार के सब लोग आकर 'नाम' ले गए हैं। अब उन्हें कृपाल की ताकत पर बहुत श्रद्धा है।

अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ॥
थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रुआइआ॥
मनि अंधै जनमु गवाइआ॥ मनि अंधे जनमु गवाइआ॥

गुरु नानक साहब कहते हैं कि इसने मन के पीछे लगकर यह हीरा-जन्म विषय-विकारों में गँवा दिया। किए गए कर्मों के हिसाब से वहाँ यमों के जूते पड़ते हैं कहीं सिर छिपाने की जगह नहीं। बहुत रोता चिल्लाता है कोई इसकी चीख-पुकार नहीं सुनता।

सन्त-महात्माओं का बानियाँ लिखने का भाव हमें दहशत में डालना नहीं। वे सच्चाई बयान करते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नानक दास मुख ते जो बोले इहाँ उहाँ सच होवे।

***

धन्य अजायब

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम:

02 से 06 फरवरी 2018
02 से 04 मार्च 2018
31 मार्च से 02 अप्रैल 2018

मासिक पत्रिका प्राप्त करने के लिए संपर्क करें

अजायब बानी
आर.एस.जी – 01,
वी.आई. पी. कालोनी,
रिद्धि सिद्धि इन्कलेव (प्रथम)
श्री गंगानगर – 335 001 (राजस्थान)
99 50 55 66 71 व 80 79 08 46 01

Ajaib Bani
R.S.G.-01
V.I.P. Colony
Ridhi Sidhi Enclave Ist
Sri Ganganagar-335 001(Raj.)
9950556671, 8079084601